गजनवी का आक्रमण

असि० प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी० एम० कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो०-8051796740

यामीनी वंश या गजनवी वंश

संस्थापक – अलप्तगीन

राजधानी – गजनी (इसी राजधानी के नाम पर गजनवी वंश नाम पड़ा)

क्षेत्र विस्तार – अफगानिस्तान एवं उसके आस-पास

अलप्तगीन का संघर्ष – हिन्दू शाहिया वंश से (भारत के उ० प० में अवस्थित), अनिर्णीत

~~अलप्त~~

अलप्तगीन के बाद के शासक – इसहक → बलक्तगीन → पीराई → सुबुक्तगीन

सुबुक्तगीन – अलप्तगीन का गुलाम, बाद में दामाद बना

क्षेत्र विस्तार – बस्त, दवार, कुसदार, बामियान, तुर्किस्तान, गौर की विजय

संघर्ष – हिन्दू शाहिया वंश से (कई बार)

सुबुक्तगीन Vs जयपाल —परिणाम→ जयपाल की निरंतर पराजय

↓ यामिनी वंश ↓ हिन्दू शाहिया वंश

* सुबुक्तगीन के दो पुत्र थे - इस्माइल तथा महमूद गजनवी। सुबुक्तगीन ने इस्माइल को अपना उत्तराधिकारी चुना। किन्तु महमूद को यह पसंद नहीं आया। फलस्वरूप दोनों भाईयों के बीच संघर्ष हुआ जिसमें महमूद ने इस्माइल को पराजित कर दिया तथा सत्ता पर अधिकार कर लिया। यह वर्ष 998 ई० का था।

महमूद गजनवी – जन्म → 971 ई०

पिता का नाम – सुबुक्तगीन

सत्ता पर आया – 998 ई०

सत्ता के लिये संघर्ष – अपने भाई इस्माइल से

पद – विश्व का प्रथम सुल्तान

प्रारम्भिक विजय – हिरात, बल्ख, बस्त, खुरासान की। जिसके पश्चात् बगदाद

के खलीफा अल-कादिर बिल्लाह ने महमूद गजनवी को "अमीन-उद्-दौला" तथा "अमीन-उल-मिल्लाह" की उपाधियाँ प्रदान की।

महमूद गजनवी के भारत पर आक्रमण के कारण :-

1. महमूद गजनवी भारत में इस्लाम धर्म की ~~पवित्र~~ प्रतिष्ठा को स्थापित करना चाहता था महमूद के दरबारी इतिहासकार उतबी ने उसके आक्रमणों को जिहाद माना था जिनका मूल उद्देश्य इस्लाम का प्रसार और बुतपरस्ती (मूर्ति पूजा) को समाप्त करना था। तुर्कों के नवीन धार्मिक जोश और उस समय की परिस्थितियों को देखते हुए इसे अस्वाभाविक भी नहीं माना जा सकता है। महमूद ने भारत में मंदिरों को लूटा ही नहीं बल्कि मूर्तियों और मंदिरों को नष्ट-भ्रष्ट भी कर दिया। इस कारण यह माना जाता है कि महमूद का एक उद्देश्य धर्म का प्रचार और इस्लाम की प्रतिष्ठा को स्थापित करना था और यदि ऐसा नहीं भी था तो उसने उन्हें अपने राजनीतिक तथा आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति का साधन अवश्य बनाया था। यद्यपि इस मत से आधुनिक मुस्लिम इतिहासकार जैसे इरफान हबीब, मो॰ जाफर, मो॰ नाजिम आदि ने इंकार किया है। उनका मानना है कि महमूद के आक्रमण का प्रथम उद्देश्य धन की लूट ही था।

2. महमूद का प्रमुख उद्देश्य भारत की सम्पत्ति को लूटना ही था, इससे कोई भी इतिहास-कार इंकार नहीं करता। महमूद धनलोलुप था और उसे गजनी राज्य के विस्तार तथा राज्य-विस्तार के लिये धन की आवश्यकता थी। उसके प्रारम्भिक आक्रमणों की सफलता और धन के लूटमार ने उसे और अधिक लालची बना दिया। प्रत्येक अभियान पर जो धन-राशि उसे भारत से प्राप्त हुई उसने उसे भारत की सम्पन्नता से परिचित करा दिया जिससे उसने अपने प्रत्येक आक्रमण को अधिक से अधिक धन प्राप्त करने का साधन बनाया।

3. पड़ोस के हिन्दू राज्य को नष्ट करना महमूद का राजनीतिक उद्देश्य था। गजनी और हिन्दू शाहिया वंश के झगड़े अलप्तगीन के समय से चले आ रहे थे और तीन बार हिन्दू-शाहिया राज्य गजनी वंश पर आक्रमण कर चुका था। अपने इस शत्रु को समाप्त करना महमूद के लिये आवश्यक था। इस कारण महमूद ने स्वयं आक्रमणकारी

P.T.O

-नीति अपनाई। हिन्दूशाही-राज्य को समाप्त करने के पश्चात् उसका साहस बढ़ गया और उसने भारत में दूर-दूर के क्षेत्रों पर आक्रमण तथा विजय करना प्रारम्भ किया।

4. यश की लालसा भी महमूद के आक्रमणों का कारण थी। महमूद महत्वाकांक्षी था और सभी महान शासकों की भाँति वह भी राज्य-विस्तार और यश का भूखा था। उसने पश्चिम की ओर अपने राज्य का विस्तार किया था। पूर्व की ओर हिन्दू राज्य को समाप्त करना और निरन्तर युद्धों में विजय प्राप्त करके यश प्राप्त करना भी उसका एक अन्य उद्देश्य था।

इस प्रकार देखा जाय तो तर्क संगत यह प्रतीत होता है कि महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण का उद्देश्य धन की प्राप्ति रहा होगा, न कि इस्लाम का प्रचार या रक्षा करना। क्योंकि प्राचीनकाल से ही भारत के मन्दिर हिन्दुओं की सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। मूर्तियों के साथ-साथ इन्हीं मन्दिरों में सोना-चाँदी, हीरा-जवाहरात आदि रखा जाता था। इसलिये वह उसके धन संबंधी महत्व से अच्छी तरह परिचित हो चुका था। इस प्रकार भारत में आक्रमण करने का उद्देश्य धन प्राप्त करने के लिये साधन मात्र था, जिससे वह मध्य एशिया में विशाल तुर्की राज्य की स्थापना कर सके। अगर उसका उद्देश्य इस्लाम का प्रसार करना या उसकी रक्षा करना होता तो वह ईरान या ट्रान्स-ऑक्सीयाना के मुस्लिम शासकों पर आक्रमण नहीं करता।